IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

नीट प्रवेश परीक्षा में सम्मिलित होने वाली बालिकाओं की दुश्चिन्ता का उनके सामाजिक समायोजन पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन

***डॉ० पूनम देवी**

*** Assistant Professor, Juhari Devi Girls P. G. College, Kanpur, U.P. India.**

Abstract

किशोरावस्था संघर्ष एवं भूफान की अवस्था है। यह अवस्था जीवन की सबसे महत्वपूर्ण अवस्था है। इसमें किशोर अपने भविष्य का निर्माण करते हैं, प्रस्तुत शोध नीट परीक्षा में सम्मिलित होने वाली बालिकाओं पर उनकी दुश्चिन्ता का सामाजिक समायोजन पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन किया गया है, शोध में दुश्चिता का मापन करने के लिये A. K. Sinha एवं L.N.K Sinka द्वारा निर्मित दुश्चिंता परीक्षण एवं सामाजिक समायोजन का मापन आर. सी. देवा द्वारा निर्मित सामाजिक समायोजन परिसूची का प्रयोग किया गया। शोध के निष्कर्ष मे दुश्चिन्ता के तीन स्तर निम्न, औसत एवं उच्च स्तर पाये गये तथा दुश्चिंता और सामाजिक समायोजन के मध्य धनात्मक सहसम्बन्ध पाया गया।

Keyword NEET परीक्षा, दुश्चिंता सामाजिक समायोजन

प्रस्तावना : भारत देश विविधताओं का देश है. यहा पर विभिन्न प्रकार की संस्कृति तथा धार्मिक प्रवृत्तियाँ पायी जाती है, फिर भी यहाँ पर सभी को समानता का अधिकार प्राप्त है तथा सभी की संस्कृतियाँ और धर्म का सम्मान किया जाता है। सभी को शिक्षा के समान अवसर प्रदान किये गये जाति लिंग आदि का भेदभाव संविधान में निषेध है। युवा वर्ग को अपनी प्रतिभा दिखाने के अवसर प्रदान किये जाते है शिक्षा के क्षेत्र में अपनी प्रभुता का परचम यहाँ के युवा वर्ग ने समय समय पर लहराया है। प्रौद्योगिकी, चिकित्सा आदि के क्षेत्रों में हमारा देश अग्रणी हो रहा है यहां के युवाओं ने अपनी प्रतिभा को भारत में ही नहीं बल्कि विश्व के मानचित्र पर भी अंकित किया है।

अध्ययन की आवश्यकता : स्टेनले हाल के कथनानुसार किशोरावस्था संघर्ष एवं तूफान की अवस्था है।" यह सघर्ष एवं तूफान किशोरों को आन्तरिक एवं बाह्य दोनों रूपों से प्रभावित करता है। एक तरफ शरीर के आन्तरिक संरचना में बदलाब तथा दूसरी तरफ समाज में पहचान प्राप्त करने का संघर्ष उन्हें प्रेरित करता है। अपनी पहचान स्थापित करने के लिये अपनी वृत्ति का चयन उन्हे दिन रात मेहनत करने के लिये प्रेरित करता है। इंजीनियरिंग, मेडिकल आदि की तैयारी करोड़ो युवा करते हैं। किशोरियों में यह संघर्ष ज्यादा होता है, मेडिकल चिकित्सा क्षेत्र मे जाने वाली बालिकायें दिन रात अपनी तैयारियों में लगी रहती है, नीट प्रवेश परीक्षा में सम्मिलित होने वाली बालिकाओं की दुश्चिता को जानना प्रस्तुत शोध का लक्ष्य है तथा उनकी दुश्चिंता का उनके सामाजिक समायोजन पर क्या प्रभाव पडता है? आदि प्रश्नों के उत्तर जानने की महती आवश्यकता है।

समस्या कथन :

नीट प्रवेश परीक्षा में सम्मिलित होने वाली बालिकाओं की दुश्चिन्ता का उनके सामाजिक समायोजन पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन

तकनीकी शब्दों का परिभाषीकरण :

नीट प्रवेश परीक्षा : नीट प्रवेश परीक्षा का का शाब्दिक अर्थ मेडिकल के क्षेत्र में अध्ययन हेतु प्रवेश के लिए राष्ट्रीय स्तर पर होने वाली प्रवेश परीक्षा है।

दुश्चिंता : एक ऐसी मानसिक समस्या है साधारण शब्दों में चिंता या घबराहट आने वाले समय में कुछ बुरा या खराब घटने की आशंका होना है जबकि इनका कोई वास्तविक आधार नहीं होता।

सामाजिक समायोजन : गेट्स महोदय के अनुसार समायोजित व्यक्ति वह है जिसकी आवश्यकताएं एवं तृप्ति, सामाजिक दृष्टिकोण तथा सामाजिक उत्तरदायित्व की स्वीकृति के साथ **संगठित हो अध्ययन के उद्देश्य :**

1. नीट प्रवेश परीक्षा में सम्मिलित होने वाली बालिकाओं की दुश्चिता के स्तरों का अध्ययन ।
2. नीट प्रवेश परीक्षा में सम्मिलित होने वाली बालिकाओं की दुश्चिंता का सामाजिक सामायोजन के मध्य सम्बन्ध का अध्ययन करना ।

परिकल्पना :

1. नीट प्रवेश परीक्षा में सम्मिलित होने वाली बालिकाओं की दुश्चिन्ता के स्तरों में सार्थक अन्तर नहीं पाया जायेगा।
2. नीट प्रवेश परीक्षा में सम्मिलित होने वाली बालिकाओ की दुश्चिन्ता का सामाजिक समायोजन के मध्य सार्थक अन्तर नहीं पाया जायेगा।

सीमांकन :

प्रस्तुत शोधकार्य केवल NEET परीक्षाओं में सम्मिलित होने वाली बालिकाओं को शामिल किया गया है।

सम्बन्धित साहित्य का सर्वेक्षण :

कुमारी अचर्ना (2014) परीक्षा तनाव एवं दुश्चिंता पर शोध कार्य किया इन्होंने अपने शोध अध्ययन के निष्कर्म में पाया कि दुश्चिंता एवं परीक्षा तनाव के मध्य उच्च सहसम्बन्ध पाया गया, बिज्ञान एवं वाणिज्य वर्ग के विद्यार्थियों की अपेक्षा कला वर्ग के विद्यार्थी अधिक दुश्चिर्तित पाये गये।

चेरियन एवं लिलि (1998) विश्वविद्यालय के विद्यार्थियों में समाजिक समायोजन समस्या का अध्ययन किया उन्होंने निष्कर्ष में पाया कि विश्वविद्यालय वे प्रथम वर्ष के छात्रों में 85 प्रतिशत तक समायोजन की समस्याओं जैसे शैक्षिक सामाजिक सांस्कृतिक आदि सामाजिक समस्याओं को अनुभव करना पड़ा.

शोध विधि : प्रस्तुत शोध में सर्वेक्षण शोध विधि का प्रयोग किया गया

जनसंख्या : प्रस्तुत शोध प्रयागराज के नीट परीक्षा मे सम्मिलित छात्राओं को पर किया गया **न्यादर्श –** प्रस्तुत शोध में 80 छात्राओं का चयन यादृच्छिक न्यादर्श विधि द्वारा किया गया।

उपकरण : प्रस्तुत शोध में आकड़ों के संग्रह हेतु दुश्चिन्ता को जानने के लिय A. K. Sinha एवं L. N. Sinha द्वारा निर्मित दुश्चिन्ता परीक्षण तथा सामाजिक सामायोजन को जानने के लिये आर. सी. देवा द्वारा निर्मित सामाजिक समायोजन परिसूची का प्रयोग किया गया।

परिणाम एवं विश्लेषण : परीक्षण से प्राप्त अंको के आधार पर बालिकाओं की दुश्चिंता को तीन स्तरों में वर्गीकृत किया गया, जिनका प्रतिशतवार विश्लेषण सारणी क्रमांक 10 में प्रस्तुत किया गया है।

सारणी क्रमांक 1.0

बालिकाओं के दुश्चिता के स्तरों का वर्गीकरण

क्रम सं.	दुश्चिंता स्तर	बलिकाओं की संख्या	बलिकाओं का प्रतिशत मान
1.	निम्न दुश्चिंता स्तर	10	12.50 प्रतिशत
2.	औसत दुश्चिंता स्तर	16	20.00 प्रतिशत
3.	उच्च दुश्चिंता स्तर	54	67.50 प्रतिशत

आकडों के विश्लेषण के आधार पर 67.50 प्रतिशत बालिका उच्च दुश्चिन्ता स्तर पर, 20.00 प्रतिशत बालिका औसत स्तर पर 12.50 प्रतिशत निम्न दुश्चिंता स्तर पर पायी गयी परिणाम प्रदर्शित करते

हैं कि बालिकाओं के दुश्चिता के स्तरों में सार्थक अन्तर पाया गया अतः परिकल्पना अस्वीकृत की जाती है। प्रस्तुत आँकड़ो को पाई चार्ट द्वारा प्रस्तुत किया गया है।

बालिकाओं के दुश्चिता के स्तरों का वर्गीकरण

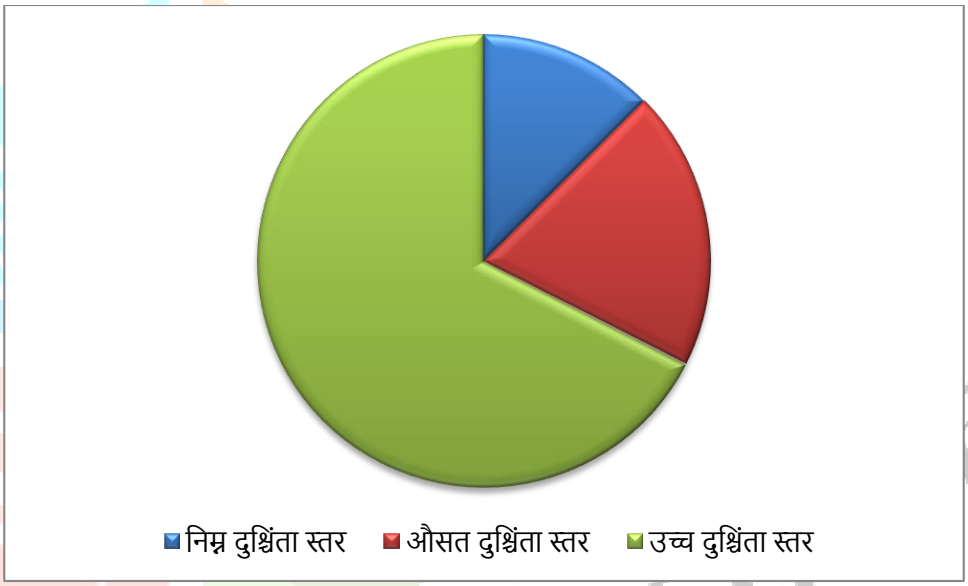

शोध के द्वितीय उद्देश्य के अन्तर्गत बालिकाओं की दुश्चिता का सामाजिक समायोजन के मध्य सम्बन्ध का अध्ययन करने के लिये सहसम्बन्ध विधि का प्रयोग किया गया है जिसका विवरण सारणी क्रमांक 2.0 पर प्रस्तुत किया जा रहा है।

सारणी क्रमांक 2.0

बालिकाओं के दुश्चिंता तथा सामाजिक समायोजन के मध्य सम्बन्ध

क्रम सं.	चर	बालिकाओं की संख्या	सहसम्बन्ध
1.	दुश्चिंता	80	0.56
2.	सामाजिक समायोजन	80	

बालिकाओं की दुश्चिता का सामाजिक समायोजन के मध्य सम्बन्ध का अध्ययन करने के लिये सहसम्बन्ध विधि के माध्यम से सहसम्बन्ध का मान 0.56 प्राप्त हुआ। जो कि दोनों चरों के मध्य धनात्मक सहसम्बन्ध को दर्शाता है जो औसत स्तर का है। परिणाम प्रदर्शित करते हैं कि दोनों चरों के मध्य धनात्मक सहसम्बन्ध पाया गया अतः परिकल्पना अस्वीकृत की जाती है।

निष्कर्ष :

1. नीट प्रवेश परीक्षा में सम्मिलित होने वाली बालिकाओं की दुश्चिन्ता के स्तरों में सार्थक अन्तर पाया गया।
2. नीट प्रवेश परीक्षा में सम्मिलित होने वाली बालिकाओं की दुश्चिन्ता एवं सामाजिक समायोजन के मध्य धनात्मक सम्बन्ध पाया गया।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. गुप्ता एस.पी. एवं गुप्ता अलका (2019) – उच्चतर शिक्षा मनोविज्ञान, सिद्धान्त एवं व्यवहार – शारदा पुस्तक भवन पब्लिशर्स एण्ड डिस्ट्रीब्यूटर्स युनिवर्सिटी रोड इलाहाबाद 211002
2. सिंह अरूण कुमार (2013) – मनोविज्ञान समाजशास्त्र तथा शिक्षा में शोध विधियां, मोतीलाल बनारसीदास 41 यू.ए. बंगलो रोड़, जवाहर नगर दिल्ली 110007
3. जायसवाल सीताराम (1972) – मनोविज्ञान की ऐतिहासिक रूपरेखा, हिन्दी समिति विभाग मुद्रक नरेन्द्र भार्गव भार्गव भूषण प्रेस त्रिलोचन, वाराणसी
4. शर्मा एवं व्यास (2008)– उदीयमान भारतीय समाज और शिक्षा राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी जयपुर मुद्रक द डायमण्ड प्रिंटिंग प्रेस, जयपुर
5. डॉ0 शर्मा आर0ए0 (2001) – शिक्षा तथा मनोविज्ञान में मापन तथा मूल्यांकन लाल बुक डिपो, मेरठ प्रकाशक : इण्टरनेशनल पब्लिशिंग हाउस मेरठ 250001
6. www.google.com